ੴ १ओअंकार सतिगुर प्रसादि ॥

प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई

खालसा पंथ की स्तुति में कुछ प्रमुख बुद्धि जीविओं के विचार
तथा
कुछ प्राचीन ग्रंथों में, ग्रंथकारों की ओर से गुरू नानक साहिब जी के प्रगट होने की भविष्य वाणियां

ਲਾਂਚ ਕਰਤਾ :

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Lunched By : Jasbir Singh
9988160484, 62390-45985
0172- 2696891

Type Setting By :
Radhe Shyam Choudhary
98149-66882

निःशुल्क सेवा : स्वयं पढ़े और अन्य लोगों को पढ़ाये।

Download Free

भूमिका

वर्तमान काल में समस्त मानव समाज अधोगति में है कहीं शांति दिखाई नहीं देती प्रत्येक स्थान पर कलह-क्लेश का वातावरण है, ऐसे में मानसिक तनाव होना स्वाभाविक बात है। इस तनाव भरे विश्व में मनुष्य राहत के लिए कृत्रिम साधनों की ओर आकर्षित होता है। वे सोचते है शायद उन्हें मानसिक द्वेषों से छुटकारा मिल जाएगा परन्तु उन का यह भ्रम भी जल्दी टूट जाता है क्योंकि सभी प्रकार के नशे केवल क्षणिक राहत ही देते है वास्तव में वे और कष्टों का कारण बन कर दृष्टिगोचर होते हैं अत: प्राणी शांति की खोज में दर-दर भटकता फिरता है परन्तु शांति कहाँ? इस प्रकार इन भटकती हुई आत्माओं को कुछ चतुर **(ठग)** लोग धर्म-कर्म का झासा देकर अपने पाखण्डी जाल में फुसलाते हैं और उन का शोषण करके उन्हें असहाय छोड़ देते हैं। जिस से नास्किता फलती-फूलती है वास्तव में इन दम्भी गुरूओं के चक्रव्यूह में फसा व्यक्ति दुविधा भरा जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है। **वे घर के न घाट के होकर जीते हैं।** क्यों कि वे अज्ञानता के कारण दो नम्बर के प्रपंची साधु-संतों के फैलाए माया जाल में वैसे ही फंस जाते हैं जैसे किसी नदी के भवर में फसा व्यक्ति। उन्हें माया मिली न राम, के मुहावरे अनुसार भटकना पड़ता है। कई तो आत्महत्या भी करते पाये जाते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि शान्ति कहां खोजे जहां धोखा न मिले? इस उलझे हुए प्रश्न का उत्तर है।

मेरे माधउ जी, सति संगति मिले सु तरिआ ॥

आध्यात्मिक दुनिया के खोजी यदि सत्य की खोज के लिए अद्वैत वाद का सहारा लेकर समस्त मानव समाज के धर्म-कर्मो को तुलना अध्ययन निर्पेक्ष दृष्टि से करे तब वे पायेगें कि गुरू नानक मिशन मानव समाज को वर्ग विहीन ईर्ष्या-निन्दा से दूर, भ्रातृत्व के समूह में ले जाने की क्षमता रखता है। जहाँ समस्त मानव समाज को एक सूत्र में पिरो कर प्यार ही प्यार बांटा जाता है, जहाँ

ना को बैरी नही बिगाना, सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ पृष्ठ न. 1299

गुरुवाणी के महा वाक्य अनुसार व्यवहार किया जाता है।

• • • • •

नोट –

जिन बुद्धिजीवियों ने गुरू नानक मिशन का अध्ययन किया है उनकी टिप्पणीयां अगले पृष्ठों पर पढ़ने के कृपा करे।

गुरु नानक मिशन के प्रति अन्य धर्मो के कुछ उच्च कोटि के विद्वानों के विचार

1. स्वामी नित्या नन्द जी :

स्वामी नित्या नन्द जी ने अपने विचार अपनी पुस्तक 'गुरू ज्ञान' के पन्ना **4** तथा **5** पर इस प्रकार प्रकट किए है:

''मेरा जन्म बंगाल का है, एक योगी जी हमारे नगर में कभी कभी आया करते थे, उन का नाम था- श्री स्वामी ब्रह्मा नन्द जी। इन का जीवन रहस्यमयी था, वाक्य सिद्धि प्राप्त थी। जो मुँह से निकलता तत्काल हो जाता।

मेरी आयु **135** वर्ष से ऊपर है, भारत वर्ष में इन जैसे योगी बहुत कम देखने को मिलते है। मेरे पिता जी की इन पर अति श्रद्धा थी। एक दिन वे हमारे घर के दरवाजे पर आ खड़े हुए और ऊँची आवाज से कहा 'मेरी अमानत लाओ'। इस से पहले आप कभी नगर में नहीं आए थे। उनको देख कर सारा परिवार चकित रह गया, योगी जी ने जो कुछ कहा उस ने और भी विस्मित कर दिया। समझने की कोशिश करने पर भी पिता जी न समझ सके कि योगी जी क्या मांगते हैं? योगी जी ने कोई चीज कभी दी ही नहीं थी, **अतः** अमानत कौन सी मांग **रहे** हैं? उन्होंने दो बार फिर यही कहा- 'मेरी अमानत लाओ'। पिता जी ने चरण पकड़ लिए और कहा आप कौन सी अमानत मांगते हैं? योगी जी घर के अन्दर आ गए, आते ही मेरे कन्धे पर हाथ रख कर कहा, 'यह लड़का मेरी अमानत है।' तुम्हारे घर रहने का नहीं, मुझे दे दो, हम चार सहोदर भाई थे, लेकिन लड़का देना सहज बात नहीं थी, और योगी जी की बात को उलटाना भी मुश्किल था। घर के लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे, सब के मुँह बन्द थे। योगी जी यह कह कर मेरी अमानत मेरे पास जल्दी पहुंचा दो,' अपनी कुटिया की ओर चले गए। सांय मेरी माता तथा पिता जी योगी की की कुटिया में गए, वहां क्या बात-चीत हुई, मुझे नहीं बताई गई। हां, दूसरे दिन प्रातःकाल मुझे योगी जी की कुटिया में पहुँचा दिया गया। **छः** मास वहां रहने के पश्चात् योगी जी मुझे साथ ले कर वहां से चल पड़े योगी जी संस्कृति के महान विद्वान थे और अपने शुभ नाम को सार्थक करने वाले योगी थे। समझने की सारी बाते उन्होंने मुझे समझाई और सिखाने की बाते सिखाई, जिस स्थान पर कोई सिद्ध योगी देखा वहां ठहर कर मुझे उन से लाभ उठाने का अवसर दिया। **बम्बई, मद्रास, उड़ीसा, बिहार, प्रयागराज, आगरा और कानपुर में विचरते हुए पंजाब में आए।** यहां एक उदासी महापुरुष के दर्शन हुए। विचार चर्चा में दिन बीतने लगे। उदासी जी का नाम स्वामी सत्या नन्द जी था। इन्होंने गुरू घर की रीति कुछ ऐसे ढंग से सुनाई कि श्री स्वामी ब्रह्मा नन्द जी मुग्ध हो गए। अमृतसर गुरू-दरबार के दर्शन करके उनकी आत्मा पर कुछ इस प्रकार को प्रभाव पड़ा कि वह गुरू घर के ही हो गए। कुछ

समय पंजाब में व्यतीत किया, फिर हरिद्वार चले आये। वहां एक दिन अच्छे भले बैठे थे, उन की आँखे डुब-डुबाती देख कर मैंने कारण पूछा। उन्होंने उतर दिया कि आयु भर रेत छाना, तत्व वस्तु गुरू घर में थी, अब एक जन्म गुरू-घर में लेना पड़ेगा तब कल्याण होगा, यह कहते हुए उन्होंने शरीर छोड़ दिया।

मैं भी गुरू-घर के **'वाहिगुरू-मन्त्र'** का जाप करता हूँ, योग साधना योगाचारियों के पास बैठ कर और वर्षो-वर्ष किए जो आनन्द और शान्ति मुझे अब प्राप्त है, यह पहले कभी नहीं मिली।

गुरू का मार्ग पूर्ण है **'वाहिगुरू'** शब्द की महिमा कही नहीं जा सकती, गुरू नानक देव और गुरू गोबिन्द सिंघ जी की शिक्षा अमृतमय है। गुरूवाणी से बढ़कर कल्याणकारी कोई और वाणी नहीं। योगी जी ने आँखे बन्द करने से पहले जो सन्देश मुझे दिया, दूसरों तक पहुँचाना मेरा कर्त्तव्य है। जो सिद्धि और प्राप्ति 'वाहिगुरू' नाम के जप से सहज में हो जाती है और दूसरे कठिन साधना करने से भी दुर्लभ प्राप्त होती है। यह सत्य है, परख किया हुआ सत्य है और निर्विवाद सत्य है।

मेरी अवस्था पुस्तक लिखने-लिखाने की नहीं है। कुछ प्रेमी सज्जनों की प्रेरणा से अपने जीवन में देखी-भली बाते प्रस्तुत है। यदि किसी एक व्यक्ति ने भी इस से लाभ उठाने का प्रयत्न किया तो मेरा परिश्रम सफल हो जाएगा।

2. स्वामी रामतीर्थ दंडी संन्यासी

स्वामी रामतीर्थ जी दंडी सन्यासी जी ने अपने विचार अपनी पुस्तक ''सर्वोतम धर्म ग्रंथ श्री गुरू ग्रंथ साहिब तथा सर्वोतम पन्थ खालसा पन्थ'' में लिखे है। पहली पुस्तक के प्रारम्भ में इस प्रकार लिखा है :

दो शब्द :

प्यारे पाठकजनों, मुझ से अन्तर्यामी 'सतिगुरू प्रसादि' रूप प्रभु जी ने सर्वोतम ग्रंथ, आदि श्री गुरू ग्रंथ साहिब नाम की यह पुस्तक लिखवाई है। भारत के प्राचीन धर्म ग्रंथों, वेदो, स्म्रितियों, महाभारत, तन्त्रों, पुराणों तथा समस्त सूत्रों के अध्ययन से मुझे अनुभव हुआ है कि उनमें कई धर्म विरोधी तत्व मिले हुए है। मैंने उन तत्वों के कुछ नमूने देकर उनकी आलोचना भी कर दी है तथा पुस्तक के अन्त में 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब' जी की निर्मल वाणी की झलकियां भी दी है जो वाणी को परम कल्याणकारी तो प्रदर्षित करती ही है पर प्राचीन ग्रंथों में आए दोषों से भी रहित सिद्ध हो जाती है। इस बाणी जैसी उत्तम बाणी मुझे कोई और नजर नहीं आई।

अन्त में मैं इस उम्मीद से यह पुस्तक भेंट कर रहा हूँ कि सत्य के पारखी सज्जन निश्चय ही इस का स्वागत करेंगे।

श्री राम तीर्थ जी ने हिन्दू धर्म के सभी ग्रंथों का बहुत बारीकी से अध्ययन किया था तथा उन में कुछ ऐसी बातें लिखी हुई हैं जो मनुष्य को मुक्ति दिलाना तो बहुत दूर की बात है, आचरणविहीन बनाती है। इसी कारण ही गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी को सर्वोतम वाणी कहने के लिए मजबूर हो गए है। उन्होंने जीवन के अन्तिम पड़ाव में अमृत धारण कर लिया और सिंघ सज गये थे।

(यह दोनों पुस्तके सर्वोतम धर्म ग्रंथ श्री गुरू ग्रंथ साहिब तथा सर्वोतम पन्थ खालसा पन्थ' शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर से नि:शुल्क मिलती है)

3. शाम लाल पटियाला :

निर्मल संदेश :

पूज्य श्री दंडी स्वामी राम तीर्थ जी की रची पुस्तक 'सर्वोतम ग्रंथ' आदि श्री गुरू ग्रंथ साहिब' जी को मैंने गहराई से विचारा तथा अध्ययन किया है। स्वामी जी ने परिश्रम करके सुन्दर विवेक युक्ति रीति से लिखा है। अपनी पुस्तक में स्वामी जी ने प्राचीन समय के बहुत से अन्धविश्वासों का समुचित ढंग से न्याय पूर्वक खण्डन किया है। इस लिए मैं स्वामी जी की तथा उन के इस उच्च कोटि के परिश्रम की भरभूर प्रशंसा करता हूँ तथा इस विचार का हूँ कि 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब' प्राणी मात्र के लिए अत्यन्त सुन्दर तथा लाभदायक धर्म ग्रंथ है। दु:खी जनता से मेरी विनम्र विनती है कि समूह सज्जन मानव समाज के इस अति उत्तम ग्रंथ का अध्ययन करके चिर काल से चले आ रहे अनेक कारणों से पैदा हुए अन्ध विश्वासों का त्याग करके अपने मानव जीवन को सफल बनाएं।

4. डा. राधा कृषनन :

Quoted by Mary Pat Fisher, Living Religious Prentice Hall 4th Edn. 1990, p. 401)

Dr. Radha Krishnan said that Guru Gobind Singh 'raised the Khalsa to defy religious intolerance, religious persecution and political inequality.... Those who grovelled in the dust rose, proud, defiant and invincible in the form of Khalsa. They bore all suffering and unnameable tortures cheerfully and unflinchingly..... India is at long last free. This freedom is the crown and climax and logical corollary to the Sikhs Guru's and Khalsa's terrific sacrifices and heroic exploits.

5. पंडित मदन मोहन मालवीय :

पंडित जी ने सिक्ख धर्म का अध्ययन करने के पश्चात् समस्त हिन्दू जाति को यह कहा कि हर हिन्दू परिवार में कम से कम एक लड़के को सिंघ बनाए ता कि वह अपने परिवार की रक्षा कर सके। उन्होंने संत अतर सिंघ जी से बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की नीव रखवाई थी।

6. महात्मा गांधी :

महात्मा गांधी जी सिक्खों को शूरबीर तथा आज़ादी के परवाने मानते थे। गुरू के बाग में मोर्चे की जीत पर उन्होंने 7 जनवरी 1922 को सिक्खों के जत्थेदार बाबा खड़क सिंघ को यह तार भेजी, ''शूरबीर सिक्खों ने देश की आज़ादी की पहली लड़ाई जीत ली है जिस से भारत का सर ऊँचा हुआ है।'' उन्होंने ननकाणा साहिब के साके को अंग्रेज सरकार का एक बहुत भारी अत्याचार बताया।

7. रबिंदर नाथ टैगोर :

यह गुरूबाणी से इतने प्रभावित हुए कि इन्होंने गुरूबाणी के अनेक शब्दों का अनुवाद बंगाली भाषा में कर अपनी पुस्तक ''गीतांजली' में साम्मिलित कर लिया। उन का विचार था कि अन्तर-राष्ट्रीय गीत, गुरू नानक साहिब द्वारा प्रभु के सम्मान में जो आरती उच्चारण की गई है ''गगन मय थाल रवि चन्द दीपक बने'' यह आरती होना चाहिये। उन्होंने गुरू गोबिन्द सिंघ द्वारा खालसा पंथ की साजना को बेमिसाल बताया और गुरू गोबिन्द सिंघ जी की प्रशंसा में कई कविताएं अपनी पुस्तकों में लिखी हैं।

8. डा. अंबेदकर :

आप कहते है (1) श्री गुरू ग्रंथ साहिब मेरे लिये अध्यात्मिक गाईड हैं। श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी जाति - पाति भिन्न-भेद से रहित सोसाइटी को मान्यता देते हैं। मैं समझता हूँ कि जो कुछ मेरे लिये अच्छा है वह मेरे भाइयों के लिये भी अच्छा है। 1935 में गुरमति प्रचार कॉन्फ्रेंस से प्रभावित हो कर वह सिंघ साजना चाहते थे। सिक्खी असूलों की मानवता प्रति विशाल उदारता के प्रसार के लिये उन्होंने निजी दिलचस्पी लेकर मुबई में खालसा कॉलेज खुलवाया तथा इस से पहले अपने दो भतीजों को खालसा कॉलेज अमृतसर में दाखिल करवाया।

9. डा. मुहम्मद इकबाल :

पंजाब के प्रसिद्ध शायर मौलाना इकबाल के मन में गुरू नानक देव जी के प्रति अथाह श्रद्धा प्यार था। उन का कहना है कि गुरू नानक साहिब का इस संसार में आगमन किसी प्रकार से भी पैग़बर इब्राहिम से कम महत्व वाला नहीं जो 5000 वर्ष पहले पधारे थे। आगे लिखते है कि उन में इतनी इल्लाही शक्ति थी कि वे हर मज़हब जाति, कौम के लोगों को अपने ईश्वरी प्यार में आकर्षित कर लेते थे तथा सत्य के मार्ग पर चलने का उपदेश देते थे। सैयद हबीब शाह इन का दोस्त था उस ने गुरू नानक साहिब की 'जपु' बाणी का उर्दू में अनुवाद करने का मन बनाया तो इन्होंने उस को पत्र लिख कर कहा कि खुदा से पहले यह शक्ति मांगना कि वह आप को ऐसी शक्ति प्रदान करें कि आप इस कार्य को बिना पक्ष-पात के सम्पन्न कर सकें।

10. मौलवी गुलाम अली :

औरंगज़ेब के पौते फरूखसीयर का दरबारी अपनी पुस्तक ''तवारीख मुहबते आजम'' में लिखता है ईश्वरीय नानक देव जी के उपदेशों से पत्थर दिल भी मोम हो जाते हैं। उन की ईश्वरी वाणी ने सारी दुनिया को पवित्र कर दिया। जो भी ज्ञान हुनर, तौर तरीके, तथा अलौकिक दैवीय गुण जिन को कमा कर पैगंबरी दरजे तक पहुँच सकते है, बिना गुरू नानक देव जी के खुदा ने और किसी को नहीं दिये। मुझे भरोसा है कि दोनों हिन्दू-मुसलमान मज़हबों में से द्वैत दूर हो कर एक सिक्ख धर्म ही हो जाएगा क्योंकि नमाज़ रोज़ा, सुन्नत, काहबा बुत परस्ती, छूत-छात, जनेऊ पहनना जात-पात तथा अमीरी गरीबी इस मज़हब में नहीं। इस लिये यह मज़हब सब की पसन्द है।

11. पाकिस्तानी जनरल मुकेश खां :

अपनी पुस्तक **Crisis of Leadership** में **1971** की हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की लड़ाई में सिक्खों की बहादुरी के लिये इस प्रकार लिखते है: ''हमारी हार का बड़ा कारण सिक्खों के सामने हो कर लड़ना है। सिखों के सामने हमारी कोई पेश नहीं गई। सिक्ख बहुत बहादुर हैं तथा शहीदी पाने के लिये बेपनाह शौक रखते हैं। यह अपने से कई गुणा अधिक फौज़ को हराने की शक्ति रखते हैं।''

12. डा. मुहम्मद युसफ अब्बासी :

आप काइदे-आज़म युनिवर्सिटी इस्लामाबाद पाकिस्तान के इतिहास विभाग के भूतपूर्व मुखिया हैं। आप गुरू ग्रंथ साहिब के बारे में लिखते हैं कि यह विश्व ज्ञान का ख़ज़ाना है। गुरूवाणी तो विशाल समुन्दर है जहां हर एक अभिलाषी को मन भाते रत्न जवाहरात, हीरे मिल सकते हैं। आज विश्व को एक धुरे से जोड़ने की आवश्यकता है जिस के लिये गुरूवाणी हमारा मार्ग दर्शन है।

13. मुहसन फानी :

यह गुरू अर्जुन देव जी तथा हरगोबिन्द साहिब के समकाली थे। अपनी पुस्तक ''दबिस तानि मज़ाहिब' में लिखते है कि गुरू हरगोबिन्द साहिब जी की कृपाण न तो कभी गुस्से में न ही किसी बदले की भावना से उठी। यह तो केवल मज़लूमों तथा स्व रक्षा के लिये उठी। आगे पुस्तक के पन्ना **249** में लिखते हैं कि गुरू साहिब ने अपने सिक्खों को माँस खाने तथा शराब पीने से सख्त मनाही की थी। उन्होंने स्वयं भी कभी मांस नहीं खाया तथा अपने सिक्खों को जीव हिंसा न करने का सख्त हुक्म किया। गुरू अर्जुन देव जी तथा गुरू हरगोबिन्द जी ने इन वस्तुओं के सेवन की मनाही के विशेष हुक्म जारी किये।

14. गुलाम जिलानी :

यह एक इतिहासकार हैं वह अपनी पुस्तक 'जंगनामा मुलतान' में लिखते हैं कि वह सिक्ख फौजों में सिक्खी वेष में जासूसी के लिये घूम फिर जाता था। वह लिखते हैं कि मुलतान की जंग में महाराजा रणजीत सिंघ की एक बड़ी तोप का पहिया टूट गया। अब मुलतान का किला फतह होना मुश्किल हो गया पर सिक्खों ने गुरू का नाम ले कर तोप को अपना कंधा देना शुरू कर दिया। जब तोप चलती तो उस के पड़खच्चे उड़ जाते। इस की परवाह न करते हुए कंधा देने वालों को लाईन लगी हुई थी। इन की बहादुरी देख कर मेरा भी कंधा देने का मन बन गया परन्तु मैंने कंधा इस लिये नहीं दिया कि ऐसा होने के बाद इस बहादुरी का इतिहास कौन लिखेगा?

15. काज़ी नूर मुहमद : अहिमद शाह अब्दाली का इतिहासकार (लेखक)

आप सिक्खों के इखलाकी जीवन के बहु प्रकारी गुणों के सम्बन्ध में कहते हैं कि सिक्खों ने चोरी करनी तो सीखी ही नहीं और न ही किसी की बहु-बेटी की इज्ज़त पर हाथ डालते हैं। ऐसा करना इन के धर्म में सख्त मनाही है। हर सिक्ख इस धार्मिक नियम को सख्ती से निभाता है। ये अपने ऊँचे आचरण के कारण किसी कामी तथा लुटेरे

की कभी भी संगत नहीं करते। दुश्मन की औरतों तथा बच्चों को मारना भारी अपराध ही नहीं समझते बल्कि उन की रक्षा के प्रयत्नशील रहते हैं।

(16) **साई बुल्ले शाह:**

ना कहूँ अब की, ना कहूँ तब की, बात कहूं मैं जबकी।

अगर न होते गुरू गोबिन्द सिंघ तो सुनत होती सब की।

(17) **आरनोल्ड त्यानबी :**

20वीं सदी के हरमन प्यारे अंग्रेज़ इतिहासकार जिस ने सारी मानवता का इतिहास बीस जिलदों में कलम बंद किया है, उस में गुरू गोबिन्द सिंघ जी महाराज को बड़े ही ऊँच दरजे की इल्लाही शखसियत दर्शाया है। वह बड़ी भावुकता और श्रद्धा के साथ लिखता है कि गुरू साहिब ने जिस खालसे की सृजना की इस से अधिक श्रेष्ठ इन्सान का इस दुनिया में होना असंभव है।

जब पश्चिमी संगठनों तथा यू. ऐन. ओ. को गुरू ग्रंथ साहिब जी के इल्लाही उपदेशों की जानकारी हुई तो उन्होंने कुछ बाणियों का अपनी समझ के अनुसार अंग्रेज़ी और दूसरी भाषाओं में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक के मुख-बंध को लिखने के लिए उनको त्यानबी जी से अधिक सूझवान और पतवंता इन्सान न मिला क्योंकि इन्होंने सभी धर्मो और समाज की बड़ी गहराई से पड़चोल की हुई थी। उन्होंने इस पुस्तक के मुख-बंध पर विशेष तौर पर लिखा है कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी सारी लोकाई के भले के लिए नयें सर्वप्रिय मार्ग दर्शक है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के नाम मार्ग में कर्म मार्ग और ज्ञान मार्ग के शुभ गुणों के बावजूद, परमात्मा को नाम और शब्द रूप में ही कल्पित किया गया है।

वे अपनी पुस्तक **Sacred writings of the Sikhs -A Unesco Publication** में यह वर्णन करते है " मानवता का धार्मिक भविष्य धुंधला है परन्तु फिर भी इस के बावजूद भविष्य में सिक्ख धर्म और गुरू ग्रंथ साहिब की बाणी में ऐसा इल्लाही उपदेश है जो सारी दुनियां को परमार्थ जीवन की सेध दे सकता है।"

त्यानबी ने और भी दर्शाया है कि गुरू गोबिन्द सिंघ जी महाराज का चलाया मार्ग सर्व श्रेष्ठ है जिस में इन्सान सांसारिक जीवन में गुरमति अनुसार रहन-सहन रख कर प्रमात्मा में लीन हो जाता है। सासारिक कार्य व्यवहार करते हुए भी सन्यासी है अथवा सिक्ख अपनी दसां नौहा (**परिश्रम**) की किरत विरत गुरू को हाज़र समझ कर करता है। गुरू ग्रंथ साहिब के उपदेशों अनुसार अपना जीवन ढ़ाल कर परमात्मा में लीन हो जाता है। इस प्रकार गुरू गोबिन्द सिंघ जी महाराज लैनिक (रूस का बहुत बड़ा समाजवादी नेता) से भी दो सदियों पहले इस आदर्श मार्ग को दुनियां को दिखा गए हैं।

त्यानवी यह भी लिखते है कि उन को एक अमरीकन औरत ने पूछा कि आप दुनियां के धर्मो के इन्सानों को मिले हो तथा उनकी रहू-रीतों और धार्मिक विचारों को जाना, सोचा परखा और कलम बंद किया है इस लिए अपने

तज़रबे के आधार पर क्या आप मुझे यह बात सकते हो कि सारी सृष्टि में सब से सुन्दर मनुष्य कौन है? उन्होंने ने कहा, "**खुली दाड़ी वाला पूरन गुरसिक्ख।**" यह सुन कर वह बहुत हैरान हुई। इस उपरांत उस ने पूछा कि तुम्हारे ख्याल अनुसार सब से बदसूरत मनुष्य कौन है? तो उन्होंने झट जवाब दिया कि दाड़ी कटा सिक्ख। यह सुन कर अमरीकन औरत और भी हैरान हो गई और उसने सिक्ख धर्म के बारे और जानकारी लेने के लिए खोज करनी शुरू कर दी।

18. मिस मैरी :

सिक्खों की दलेरी बहादुरी और प्रशंसा देख कर अंग्रेज़ों ने अपने राज्य समय सिक्ख धर्म की गहरी खोज की और इस निर्णय पर पहुँचे कि यह फलसफा इन्सानी ज़िन्दगी को संतुलित आत्मिक, समाजिक और भाईचारक जीवन प्रदान करता है। इस लिए कोशिश की जाए कि अनपढ सिखों और दूसरे लोगों में इसके सही तत्थों की जगह पर ऐसे तत्थ तोड़ मरोड़ कर पेश किये जाएं कि कौम रूप में सिक्ख धर्म की कोई विशेष तसवीर न बन सके जिस से भोले भाले भारतीयों को ईसाई धर्म में तबदील करने का काम आसान हो सके। इस काम के लिए एक अंग्रेज़ स्त्री मिस मैरी को चुना गया जिस को गुरबाणी के तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर पेश करने की डयूटी दी गई। जब मिस मैरी ने सिक्ख धर्म का अध्ययन किया तो इतनी प्रभावित हुई कि वह स्वयं सिंघनी सज गई।

19. मिलटन फराईड मैन :

इन्होनें सिक्खों की प्रशंसा करते हुए कहा है कि सिक्ख भारत की भूख भी मिटाते है और रक्षा भी करते है। इतना ही नही भारत को आज़ाद करवाने में इन की मुख्य भूमिका है। उनके विचार से यदि भारत को सिक्खों की सर्बराही (नेतृत्व) सौंप दिया जाए तो फिर न तो विकास की कोई समस्या रहेगी और न ही गरीबी की। यहां तक कि हर प्रकार के बाहरी हमले की भी चिन्ता खत्म हो जाएगी (पुस्तक सिक्ख जीवन जांच)

20. बादशाह अकबर :

श्री गुरू अमर दास जी ने गुरू नानक देव जी महाराज की ओर से बीस रुपये से चलाएं लंगर को मर्यादा में बदला। आप ने जहां गुरसिक्खों की संगत को जोड़ा, वहीं आप ने पंगत की मर्यादा भी चलाई तथा यह आदेश किया कि जो भी गुरू दरबार की हाज़री के लिये आए पहले पंगत में बैठ कर लंगर छके। मुगल बादशाह अकबर के घर औलाद नहीं थी। वह औलाद कि लिये दर दर की ठोकरें खा कर गुरू अमर दास जी के दरबार में हाज़िर हुआ तो उस ने भी पहले पंगत में बैठ कर लंगर छका। उस के बाद उस ने साहिब श्री गुरू अमरदास जी के दर्शन कर दोनों हाथ जोड़ कर औलाद के लिये फरयाद की। गुरू साहिब ने उसकी श्रद्धा को देखते हुए आशीर्वाद दिया। अकबर ने लंगर के लिये गुरू घर के लिये जागीर लगाने को पेशकश की मगर गुरू जी ने कहा कि लंगर तो संगत की किरत कमाई तथा श्रद्धा से चलता है। इस लिये किसी प्रकार की जागीर की कोई आवश्यकता नहीं। इसपर अकबर ने कहा मुझे आप के यहां दीने इल्लाही के दर्शन हुए है जोकि मैं नये धर्म के रूप में विकसित करना चाहता था।

21. बोधी दलाई लामा :

नोबल ईनाम जीतने वाले तिब्बती बोद्धी दलाई लामा गुरू नानक देव जी के सम्बन्ध में कहते हैं ''संसार भर के समूह धार्मिक आगुओं के गगन मंडल में गुरू नानक देव जी अपनी उच्च जीवन राह के कारण सब से अधिक चमकने वाले सितारों में एक हैं। तिब्बत के बौद्धी नानक देव जी को अपना रक्षक, पालक तथा इष्ट मानते हैं। वे कहते हैं कि गुरू नानक देव जी हमारे गुरू पदम संभवा का अवतार हैं। उन्होंने गुरू नानक देव जी की याद में कई मंदिर बनाए हैं। तिब्बती बोद्धी दो पंथों के बंटे हुए हैं। उनमें एक तबका गुरू नानक देव जी की श्रद्धा प्रेम में केश नहीं कटवाते तथा उनको अपना **''गुरू नानक लामा''** कह कर सत्कार देते हैं। ये जब दरबार साहिब अमृतसर आते हैं तो दंडवत करते हुए अन्दर प्रवेश करते हैं। उन्होंने सिक्ख धर्म का बारीकी से अध्ययन किया है और कहा कि गुरू नानक देव जी को परमात्मा ने संसार भर में इल्लाही शांति का प्रकाश करने के लिये भेजा। अत: गुरू नानक देव जी ने संसार को सदैव शांति का मार्ग दिखवाया।

22. रूसियों के विचार :

75 वर्ष रूस धर्म हीन रहने के बाद 1992 में सोवियत संघ टूट गया। उनको यह अहसास हुआ कि लोगों का धार्मिक जीवन न होने के कारण ही देश टूटा है। अब उन को चिन्ता हुई कि कौन सा धर्म अपनाया जाये जिस से उन की आत्मिक भूख आसानी से मिट सके। संसार भर के धर्मों का अध्ययन करने के बाद वे इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि गुरू नानक देव जी का सिक्ख धर्म ही उन के लिये सही धर्म है। इसके लिये उनके डैलीगेशन के मैम्बरों ने बताया कि गुरू साहिबान की बाणियों के रूसी तथा सम्पूर्ण रूसी संघ के राज्यों की भाषा में अनुवाद करवाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। जपु जी तथा जापु साहिब के अनुवाद हो चुके हैं। उन का विश्वास है कि सिक्ख धर्म से ही उन का सही मार्ग दर्शन हो सकता है।

23. सिक्ख धर्म के लिये अंग्रेज़ों के विचार :

जिन ईसाईयों ने सिक्ख धर्म की प्रशंसा के लिये अपनी कलम उठाई उनके नाम इस प्रकार है:

(1) **ऐम. ए. मैकालिफ** (2) **जे. डी. कनिंधम** (3) **परल ऐस बक** (4) **बर्टरंउ रसल** (5) **ऐच. ऐल. बराडशाह** (6) **मिस डरोबी फील्ड** (7) **डा. नोइल किंग** (8) **सी. एफ. फेंडरीऊश** (9) **विलिय वारबर्ट** (10) **पी. एम. वाएलम** (11) **फालकन** (12) **डा. डबलियू कोल** (13) **जनरल बार्डवुड** (14) **सी. एच. लोइलिन** (15) **सर अलैगजैंडर बरनज़** (16) **ऐडवर्ड ए. डी. बिटन कोर्ट** (17) **कैनेथ सार्कस** (18) **आरचर** (19) **मार्कस ब्रबूक** (20) **डा. एच. बइलेंडे** (21) **परसीवल सपीअर** (22) The battle of Saragarhi (an unparalled bravery of the Sikhs in the World history as included in French Military School Text Books and also published by UNESCO (23) **कर्नल पिन मुबूकान्त (थाईलैंड)**

24. आर्य समाजी विद्वान लाला दौलत राय

जब पंजाब में महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य का सूर्य अस्त हो गया तो कुछ ईर्षालू हिन्दू गुट्टों ने श्री हरि मन्दिर साहिब (दरबार साहिब) की तरह ज्यों की त्यों। (हू-ब-हू) नकल करते हुए अमृत-सर नगर में एक मन्दिर का निर्माण करवाया जिस का नाम उन्होंने दुर्गीयाणा मन्दिर रखा। जिस का अर्थ था, यह दुर्गा माता का पूज्य स्थल है। परन्तु वहां लाख कोशिश करने पर भी जन-साधारण दर्शनार्थी के रूप में एकत्रित नहीं होते थे अर्थात पूजा स्थल शून्य रहता था। इस कारण वहां की प्रबन्धक कमेटी ने बौखला कर एक युक्ति सोची कि यदि हम सिक्ख इतिहास में तथाकथित त्रुटियां ढूंढ निकाले जिस के आधार पर हम सिक्खों की निंदा अथवा भर्त्सना करे तो शायद जनता हमारी तरफ आकर्षित हो जाये जिस से दुर्गीयाना मन्दिर में रौनक होने की सम्भावना बन जाये। इस कार्य के लिए उन्होंने एक आर्य समाजी विद्वान लाला दौलत राय को प्रेरित किया कि वह साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी का जीवन वृत्तांत तथा सिक्ख साहित्य का अध्ययन करें जिस में से कुछ विशेष प्रकार की त्रुटियां ढूंढ निकाले जिन को हम आधार बना कर सिक्ख समुदाय की निन्दा अथवा भर्त्सना करके प्रापेगंडा कर सके। जिस का लाभ उठाकर जनता को अपनी तरफ आकर्षित कर सकें।

इस लक्ष्य को लेकर जब इस विद्वान ने निर्पेक्ष दृष्टि से श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी का जीवन वृत्तांत पढ़ा तो वह गद-गद हो गया। उसने गुरुदेव को नत मस्तक होकर प्रणाम किया तथा उसने उनके जीवन को नये अन्दाज में उर्दू भाषा में एक पुस्तक रूप दिया जिस का नाम उसने 'साहिबे कमाल गुरु गोबिन्द सिंघ' रखा। यह पुस्तक सन् **1901** में प्रकाशित हुई। जिस को पढ़ कर पंथ दोखी (दुष्ट) बहुत दुखी हुए। इस पर उन्होंने लाला दौलत राय से पूछा तुमने यह क्या कर डाला है? जिस व्यक्तित्व की हमने तुम्हें निंदा करने का लक्ष्य दिया था। तुमने हमारे विचारों के विपरीत उन की स्तुति लिख डाली है? उत्तर में दौलत राय ने कहा-हे हिन्दूओं आप लोग कृतघ्न है मुझ से उस महापुरुष की निन्दा करवाना चाहते हो जिसने परहित के लिए अर्थात हिन्दूओं के जनेऊ तथा तिलक की रक्षा हेतु अपने पिता तथा अपने चारों पुत्रों को तुम पर न्यौछावर कर दिया हैं।

आजकल यह पुस्तक **हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेज़ी तथा उर्दू भाषा** में शिरोमणी कमेटी के बुक स्टालों में नि:शुल्क उपलब्ध रहती है।

इस प्रकार इन्होंने अपने भाषणों द्वारा कलयुग के तमाम जीवों को बताया कि पुरातन धर्म ग्रंथों, देवताओं, ऋषियों मुनियों आदि ने भविष्य वाणी द्वारा बताया है कि कलयुग में परमात्मा, ईश्वर सत्य गुरु नानक नाम से प्रगट हो कर संसार में कलयुगी जीवों के कल्याण हेतु आँएगे।

सिक्ख लोग दुनिया में सर्वश्रेष्ट उत्तम लोग हैं इनकी जीवन शैली निष्काम निष्स्वार्थ, सेवा भाव से पूर्ण, सादगी, निष्कपट, परोपकारी होती है तथा
इनकी रूप-रेखा अति सुन्दर आकर्षित प्रभावशाली होती है। (ओशो)

देखो:

(1) **भविष्यत पुराण उतरार्ध अध्याय 28 :**

''एवँवै धर्म प्राचुरयँ भविष्यति यदा कलो ।। 33 ।।

तदैव लोक रक्षयाँर्थ मलेछाना नाश हेतुबे ।।

पमचमेतु शुभे देशे बेदी बँसेच नानको नामना ।। 34 ।।

भुव राज रिषी ब्रहम शानैक मानस ।।

भविषती कलऊ सँकद तत बितयँ कलया हरे ।। 35 ।।''

(2) **विषणु पुराण अध्याय 24 अँश 4 :**

क्षत्रीयम कुले भूतना नानकेति नाम :

लोक सँरक्षणाय वक्षय सिँह पँथ नाराणामु ।।

ततशचाशटो यवनाशचतुरदस तुरुशकारा मुँडाशय त्रयोदष

एकादस मौना एतै वै प्रिथवी पतयह दश वरश

शतानि नवतयधिकानि मौकश यँति ।। 53 ।।

अर्थ : सतयुग में अँबरीक ऋषि ने उस समय के अवतार विषनु जी से आगे आने वाले युगों का हाल पूछा तो उन्होंने बताया कि कलयुग का समय अत्यँत पापों का होगा। उस समय पापियों का पाप नाश कर उनके कल्याण हेतु पूर्ण पूरुष नानक नाम धारण कर प्रगट होगें।

(3) सुखदेव जी ने कलयुग के अवतार बारे सुख सागर के काँड 12 पन्ना 679 में इस प्रकार लिखा है:

''श्री नानक सततँ समरामी श्री असच श्री असच श्री असच''

(4) ऋग्वेद अनुसार :

''श्री नानक गुरू वरँ सकलाद हेतू ।। हेतू समसत जुगताँ वर वेदी केते।।''

(5) कुरान मजीद में लिखा है :

''काला काला रसूलिला सौ लिला हूँ अलाए वसल मल आखरा ते जमाना । नानक इनशाह अल हुकमे अल उमती फिताबे ईन।''

''मोहम्मद साहिब ने अपने से बाद आने वाले अवतार के बारे में अपनी उम्मत को हदायत की है कि अल्ला ताला खुद गुरू नानक के रूप में संसार में आएँगे। आप लोगों ने उस की ईन को मानना है।''

(6) हज़रत इमाम साहिब तथा पीर वली निआमत अल्ला शाह कशमीरी जो गुरू नानक साहिब से 547 वर्ष पहले हुए हैं, ने भी लिखा है कि मरदे-खुदा नानक आएगा जो वह भेद खोलेगा जो पहले पैगँबरों ने नहीं खोले ।। सारे संसार की तव्वजो उस की ओर हो जाएगी तथा उस की फकीरी का बाज़ार खूब गर्म रहेगा।

(7) दिग्विजय ग्रंथ अनुसार :

ततो अषटो जमना भाविआ पुसकशद चत्र दसा भूयो ।

दस गरुँडअसच मोनाए कदी सई वतू ।

अर्थ : जब आठ यवन के राजे भारत में राज करेंगे। तब परमात्मा दस गुरू जामे धारन कर संसार में आवाग इस के बाद वह मौनी रूप धारन करेगा जो बुलाने से बोलेगा। यानी गुरू ग्रंथ साहिब।

(पंजाबी में रचना का समय सन् 1991, हिन्दी में अनुवाद का समय 2019)

सिक्खों के विषय में अंग्रेज़, मुस्लमान नेता क्या-क्या बताते हैं
सिक्ख इस विश्व के अंतिम मनुष्य होगें-----
विश्व विख्यात इतिहासकार आरनलड टाइनबी की भविष्य वाणि-

इतिहास का घटनाक्रम कुछ इस प्रकार चलता रहा कि सिक्खों को विश्व की दो बड़ी बहादुर वीर साम्प्रदायों मुग़ल तथा अंग्रेज़ों के साथ क्रमश: लोहा लेना पड़ा। इनमें से कोई भी वीरता की दृष्टि से किसी से कम नहीं है परन्तु इन विरोधी पक्ष के लेखकों ने क्या विचार प्रकट किये यह अपने आप में एक बहुत अद्भुत रोचक विषय वस्तु है। उन्होंने केवल सिक्खों की वीरता की बात ही नहीं की बल्कि उन का नेतृत्व कर रहे गद्दारों की व्यक्तिगत स्वार्थो का भी खूब वर्णन किया है। इन दस्तावेज़ों में दर्साय गये सत्य को यदि सिक्ख ध्यान में रख ले तो भविष्य में कई पाराजयों से बच्चा जा सकता है तथा टाइनबी की तरफ से सिक्खों के विषय में की गई भविष्य वाणी के आप जी अर्थ समझ सकते हो तथा दूसरों को भी समझा सकते हो।

ऐमदशाह अबदाली के साथ आया उस का इतिहासकार काज़ी नूर मुहम्मद ने सिक्खों के नैतिक तथा चरित्र (ऊँच्चे आचरण) की एक बहुत ही सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है: - एक बार सिक्ख सैनिकों ने मुग़लों के शिवर पर आक्रमण कर दिया तथा उस कब्जा कर लिया परन्तु उन्हें जैसे ही मालुम हुआ कि इस शिवर में केवल शत्रु पक्ष की महिलाएं ही है तब उन्होंने तुरन्त उसी क्षण अपने शस्त्र वापस म्यानों में डाल लिये और अपने घोड़ों का मुँह मोड़ लिया और तुरन्त लोट गए ।

1. **" चूं दर नेज़ा बाज़ी दर आरंद दस्त, दर आरन्द पर दुश्मन सिक्शत"**

   अर्थात - जब नेज़ा उठा लेते है तो हथों में बाहुबल इतना अधिक है कि शत्रु सेना भागने में ही भलाई समझती है।

2. **चूँ दर दस्त गीरंद शमशीरे हिन्द, बताजंद अज़्ज हिन्द ता मुलके सिंध।"**

   अर्थात - जब ये सिक्ख सैनिक हाथों में तलवार ले लेते है तो शत्रु को हिन्दूस्तान से दूर सिंध देश तक खदेड़ के ही दम लेते है - **(काज़ी नूर मुहम्मद)**

"सगां रा मगो सग कि हसतंद शेर, बमैदाने मरदां चू शेरां दलेर"

अर्थात - इन कुत्तों को कुत्ते कहना गलत है, ये तो शेर हैं वीरता इन की रणक्षेत्र में देखने योग्य होती है, वहां शेरों की भान्ती जुझते हैं। **(काज़ी नूर मुहम्मद)**

सिक्ख पिटने पर भी रूई नहीं बन जाते बल्कि इस्पात (फौलाद) होकर नया रूप धारण कर लेते है। **(सपीयर)**

सिक्ख आचरण के ऊँच्चे है परन्तु बदले की भावना बहुत तीव्र रखते है। **मीर मंनू (राज्यपाल लाहौर पंजाब, सन् 1745ई.)**

''ई मुलक राखवाहन्द ग्रिफत,'' अर्थात: वह समय दूर नहीं जब से लोग अपनी वीरता तथा एकता के बल से इस क्षेत्र के शासक बनेंगे। **(आक्रमणकारी नादरशाह)**

बाबा बन्दा सिंघ की ग्रिफतारी के समय 7 दिसम्बर, 1715 ई. को शाही सेना ने गुरदास नंगल गढ़ी पर कब्जा कर लिया। शाही सेना पर टिप्पड़ी करते हुए उन का सेना पत्ती कमर खान लिखता है, ''यह सब खुदा की रहिमत ही थी, युद्ध कौशल अथवा वीरता नहीं, यह सब हो गया वास्तव में यह कुदरत का क्रिश्मा ही था।

अल्ली – उद – दीन अपने इबरतनामाह में लिखता है : –

प्राचीन समय के सिक्ख, महिलाओं का बहुत सम्मान करते थे भले ही वे शत्रु पक्ष की हो, इस संदर्भ में वह लिखता है, जब अब्दाली के सेना पत्ती जहान खान के परिवार की स्त्रियां सिक्खों के हाथ लगी तब उन्होंने उन को ब – अदब बड़ी सुरक्षा के साथ उनकी इच्छा अनुसार जम्मू नगर में पहुंचा दिया।

मैं सिक्खों की सादगी, ईमानदारी तथा स्पष्टवादी (मुंह पर कड़ूवा सत्य कह देना) के सहास को बहुत पंसद करता हूँ। **(यकमों)**

प्रयटक (सैलानी) मूरकराफट ने अपने सफरनामे में लिखा है: – मैंने एशिया में महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य जैसा कोई ओर सभ्य राज्य नहीं देखा।''

यरूप वाले एक ईसा पर गौरव करते हैं परन्तु भारत में, मैंने अनेकों ईसा स्वयं को समर्पित करते हुए तोपों के सामने खड़े कर मृत्यु को सहर्ष स्वीकार करते हुए देखे हैं (यह घटना नामधारी आन्दोलन सन् 1875ई. की है) **(सर हैनरी काटन)**

कविराज डा. योगिदर पाल शास्त्री जी अपनी पुस्तक ''भारत में जाट राज्य'' उर्दू ऐडीशन के पृष्ठ संख्या 77 पर लिखते है'' इटालियन जाति में जूलियस सीज़र फांसीसिओं में निपोलीयन, जरमनों में हिटलर तथा युनानियों में जो स्थान सिकंदर का है, उस से भी कही ज्यादा महत्व पूर्ण और सम्मान योग्य दर्जा जाट जाति में पंजाब के महाराजा रणजीत सिंघ को प्राप्त है।

यदि डोगरा गुलाब सिंह खालसा सेना के साथ गद्दारी ना करता । (सन् 1847 ई. अंग्रेजों और सिक्खों का तृतीय युद्ध, रण क्षेत्र सभरावां) तब इधर – उधर बिखरी हुई अंग्रेजों की सेना सिक्खों के हाथों मारी जाती।

(सर चारलस जेमज़ नेपीअन)

आखीर हमें मालूम हो गया कि वे सिक्ख सेना वीर योद्धा बलिदानी सिपाहियों की है। परन्तु दु:ख और शौक है कि उनके जरनल गद्दार और निकम्मे निकले जो खरीद लिए गये। – **(जरनल समिथ)**

आमने - सामने के युद्ध में सिक्ख सेना का कोई सानी नहीं है। **(जेमज़)**

यदि सिक्ख सेना का कोई अच्छा नेतृत्व करने वाला होता तो अंग्रेजों की सेना को कोई भी नहीं बच्चा सकता था। **(सलैसन)**

वे डोगरे गद्दार जरनैल, उस सारी सिक्ख सेना को मरवाना चाहते थे, जो उनको घृणा की दृष्टि से देखती थी''

(कंनिघम)

चेलियां वाले रणक्षेत्र की महान युद्ध के विषय में टिप्पड़ी करते हुए अंग्रेज़ सेना का एक वरिष्ट अधिकारी थाकवैल लिखता है: - मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि मेरी सेना का एक भी सिपाही जीवित नहीं होगा।

हम भाग्यशाली थे कि सिक्ख सेना के वरिष्ट अधिकारी (जनरल) सभी गद्दारी और बिकाऊ निकले।'' **(गफ)**

''कभी किसी हिन्दुस्तानी राजवाड़ो की सेना ने जिस की संख्या इतनी कम हो, अंग्रेज़ों की इतनी वीरता के साथ सामना नहीं किया, जैसे सिक्ख सेना ने इस युद्ध (सभरावां का रणक्षेत्र) में किया था। अंग्रेज़ विजयी हो गये थे परन्तु यदि सिक्ख सेना को डोगरा गद्दार जरनलों का नेतृत्व का न होता तो इस युद्ध का परिणाम कुछ ओर ही होता - - - - हिन्दूस्तान की समस्त सेनाओं की तुलना में सिक्ख आत्म बलिदानी युद्ध में अजय तथा वीरता के प्रतीक थे'' **(चारलस, गफ्फ और आरथर ड़डी ऐनरज़ 'The Sikh war**

फेरू शहर का युद्ध महान संग्रामों में से एक था। अंग्रेज़ों ने जितने भी युद्ध हिन्दूस्तान में लड़े थे उन सभी में यह अधिक भंयकर था - - - - - - सिक्खों ने अंग्रेज़ों प्रशासन की इस युद्ध से जड़े हिला दी थी। **(गारडन)**

''पहली बार अंग्रेज़ों को अपने मुकाबले के शत्रु के साथ लोह लेना पड़ा था'' परन्तु इस सिक्ख सेना के गद्दार जरनैल अंग्रेजों से मिली भक्त किये बैठे थे और अंग्रेज़ों से बहुत कुछ बदलने में प्राप्त करना चाहते थे। इस लिए उन्होंने सिक्ख सेना को समय रहते फिरोज़पुर की अंग्रेज़ों की छावनी पर धावा बोलने का आदेश नहीं दिया तथा वे अंग्रेज़ों को अपनी काली करतूतों से अवगत करवाते रहे। **(कंनिघम)**

आकाली आंदोलन, स्थान गुरू का बाग, सन् 1923 ई.

पुलिस अधिकारी बी. टी. के आदेश पर पठान पुलिस कर्मीओं के द्वारा डांगों से अंधाधूंध पीटे जाने पर भी किसी आन्दोलनकारी सिक्ख के मुँह से हाए - हाए चीखे नहीं सुनी गई अत: जहां तक मेरा अनुभव है सिक्ख भारत की समस्त कौमों (साम्प्रदाय) में बहादुर - वीर पुरुष हैं।

मुझे तो ऐसा आभास हुआ कि पुलिस कर्मियों में शैतान बसता है तथा सिक्खों में वे प्रभु स्वयं विद्यमान है।

(फादर सी. ऐफ. ऐंडरीउंज)

1. राबरट कस्ट अपनी डाईरी में लिखते है, ''हज़रों वर्षो के इतिहास में केवल उस 1845 ई. की दिसम्बर की रात्री को हिन्दूस्तान के भाग्य का फैसला कुछ मुट्ठी भर लोगों के हाथों में था''।

2. यदि उस सुबह 22 दिसम्बर 1845 को सिक्ख सैनिक एक भी गोली चला देते तो भारत में से अंग्रेजों का शासन समाप्त हो जाता परन्तु ऐसा हो न सकता। (डा. हरी राम गुप्ता)

सिक्खों के विषय में गहन ज्ञान रखने वाले किसी व्यक्ति ने कितनी सटीक बात कहीं है : But for The Follies of the sikh Leadership, it would have been world Religion today.

भावार्थ : यदि सिक्ख नेता उचित नेतृत्व करते तो वर्तमान में सिक्ख धर्म मानव समाज का सब से बड़ा साम्प्रदाय होता।

हमें उपरोक्त इतिहासिक घटना क्रमों से विदित होता है कि सिक्ख धर्म सर्वोतम मानव कल्याणकारी सिद्धांतों का भण्डार है जो धर्मनिर्पेक्ष तथा परोपकारी विचारधारा पर संचालित किया जाता है।

इतिहास द्रसाता है कि सिकख लोग श्री गुरू ग्रंथ साहिब की वाणि के सिद्धांतिक पक्ष के प्रकाश में अपने समस्त कार्य करते है परिणाम स्वरूप वे लोग दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों को पराजित कर के समस्त पंजाब तथा अन्यक्षेत्रों के शासक रूप में महाराज रणजीत सिंघ के नेतृत्व छा गये।

इस प्रकार उन्होंने मानव समाज को सर्व सांझी वालंता (भ्रातृत्ववाद) का संदेश दिया। परन्तु वर्तमान में फिर से स्वार्थी प्रवृतियों के प्रभाव के कारण जातिवाद के चुंगल में फंसते चले जा रहे है अर्थात मंनूंवादी (ब्राह्मणदी) आदतों की दलदल में फंसते चले जा रहे है। जबकि सिक्ख समाज वर्ग वहीन समाज है जहां **'ना कोई बेरी, नाही बिगाना'** है अर्थात सभी एक सूत्र में पिराए हुए भाई - बन्धू हैं।

गुरु संगत जी विनम्र विनती है कि हम अपने किशोरों तथा युवा पीढ़ी को गुरु इतिहास तथा गुरु वाणि से अवगत करवाने का कार्य पर ध्यान एकागर करें ताकि वे समय रहते समाजिक बुराईयों से बच्चे रहे। यदि हम घरों में बच्चो को गुरुघर (साधसंगत) के साथ जोड़ देंगे तो स्वाभाविक है उनको अच्छे संस्कार मिलेगे जिस से अच्छे नागरिक बनेगें। इस प्रकार गुरु इतिहास तथा गुरुवाणि के अध्ययन से एक चरित्रवान आदर्शक मनुष्य बनेगें जो नशे जैसी बुराईयों पर नियंत्रण करने में हमारे सहयोगी होंगे।

सेवा :	दास :
स. दर्शन सिंघ	गुरसेवक सिंघ
स. सतनाम सिंघ	1408, बी, 2 मोहाली
स. कुलदीप सिंघ	मो. 9888760496
स. चमकौर सिंघ	

भेटा :- आप पढों तथा अन्य लोगों को पढ़ाऐ

यदि चाहे तो आप इस पुस्तिक को छपवा कर

निःशुल्क बटवा सकते हैं।

यानी गुरू ग्रंथ साहिब।

प्रिये पाठकजनों आप के चरणों में विनम्र विनती है कि इस लघु पुस्तिका के अंत में एक वैब साईट का नाम **www.sikhworld.info** लिखा हुआ है यदि आप इस को खोलेगें तो आप इस के **Main Link** में एक उपन्यास **(Novel)** मित्र मण्डली पायेगें यह एक फौजी यथार्त घटना पर अधारित नावल है जो कि रोचकशैली में तो है ही इस के साथ ज्ञान वर्दक तथा मनोरंजन से भरपूर है जो आप की जिज्ञासा को तृप्त करेगा और आप आनंदित होंगे। अत: आप से निवेदन है कि इसे **Download** करके एक बार अवश्य पढ़े।

धन्यवाद

लेखक – जसबीर सिंघ

www.sikhworld.info

Donation : A/c HDFC : IFSC 0000450 04501570003814